स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स
RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

प्रयोग के बगैर आंकड़े

1970 के दशक में रॉबर्ट गलिस जर्मनी के मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट में काम करते थे। उन्होंने कुछ कैंसर कोशिकाओं पर नशीली दवाइयों के असर का अध्ययन किया था। इस अध्ययन के दौरान उन्होंने कई जैव रासायनिक मापन भी किए थे। अपने शोध के परिणाम उन्होंने प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित भी करवाए थे।

मगर फिर कुछ गड़बड़ हुआ। गलिस के चले जाने के बाद उनके सहकर्मियों ने वही प्रयोग फिर से किए तो उन्हें पहले वाले परिणाम नहीं मिले। तब गलिस को वापिस मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट में प्रयोग दोहराने को आमंत्रित किया गया।

वहां चार बार कोशिश करने के बाद भी गलिस अपने पुराने वाले परिणाम हासिल नहीं कर पाए। तब उन्होंने स्वीकार किया कि पहले जो आंकड़े उन्होंने रिपोर्ट किए थे वे उनकी कल्पना की उपज थे।

नेचर पत्रिका को लिखे एक पत्र में उन्होंने स्वीकार किया कि "प्रकाशित आंकड़े व ग्राफ वगैरह मात्र मेरी कल्पना के परिणाम हैं और मैंने जो कुछ प्रकाशित किया था वह मात्र मेरी परिकल्पना थी न कि प्रयोगों से प्राप्त परिणाम।" उन्होंने आगे कहा कि उनके उन "शोध पत्रों के नतीजे विश्वसनीय नहीं हैं। मुझे तो उन पर इतना यकीन था कि मैंने उन्हें लिख डाला।"

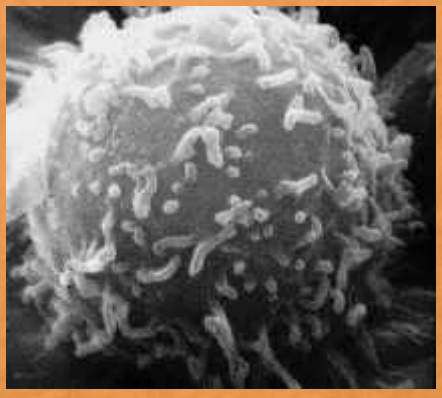

उन्होंने ऐसा क्यों किया? गलिस के मुताबिक अन्य शोधकर्ताओं के समान उन पर भी कुछ-न-कुछ प्रकाशित करने का भारी दबाव था और इसी दबाव के चलते उन्होंने काल्पनिक आंकड़ों के आधार पर शोध पत्र तैयार कर दिया था।

प्रकाशक, मुद्रक अरविन्द सरदाना की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी